वर्णाश्रम का ऐतिहासिक पर्यालोचन

डॉ0 सुरेन्द्र पाल सिंह

पश्चिम एशिया के ग्रीक सम्राट् सेल्यूकस के राजदूत मेगस्थनीज ऐसिहासिक व्यक्ति हैं। वह मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की राजसभा में आये थे, उन्होंने तत्कालीन भारत का सुन्दर वर्णन किया था, किन्तु दुर्भाग्यवश आज उसका अधिकांश भाग लुप्त हो गया है। स्ट्रैबो, डियोडोरस आदि विभिन्न लेखकों के ग्रन्थों में उद्धृत उसके अंशमात्र ही आज उपलब्ध हैं।

पर्यालोचन से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में सदा से ही वर्ण और जाति जन्मगत थी, कर्मगत नहीं। असवर्ण विवाह (विशेषरूप से प्रतिलोम विवाह) निन्दित था—इसका ऐतिहासिक प्रमाण है। प्रागैतिहासिक एवं प्राचीनतमकाल से ही जन्मगत वर्णभेद प्रथा चली आ रही है। वेदों में भी जातिभेद के बहुत प्रमाण मिलते हैं। गुण—कर्म भेद से जाति एवं इच्छानुसार वर्णपरिवर्तन के उदाहरण नहीं हैं, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा। जो लोग कहना चाहते हैं कि वेद रचना के पहले अतिप्राचीनतम समय में वर्णव्यवस्था नहीं थी एवं दूसरे देशों के अनुसार स्वच्छन्दकर्म अथवा विवाह आदि भारत में होते थें।